VOL- VII ISSUE- X OCTOBER 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

अयोध्या के रामानन्दी सन्त एवं संगीत

डॉ. अजय कुमार शर्मा

श्री अयोध्या को केवल रामानन्द सम्प्रदाय में श्रीधाम के रूप में ही मान्यता प्राप्त नहीं है, अपितु रामानन्दीय वैरागी महात्माओं के गढ़ (राजधानी) के रूप में प्रसिद्ध है। प्रायः सभी भावों से उपासना करने वाले सभी भावों से उपासना करने वाले साधु यहां उपलब्ध होते हैं, उसके अनुरूप यहां के अनेक महात्मा, संगीतज्ञ, साधक हुए, उनके गीतों का संगीत तथा भाव प्राणों को इस प्रकार झंकृत करने वाले है तथा उनकी श्रीराम भक्ति इतनी प्रगाढ़ एवं अडिग है कि लोक परम्परा में उन्हें नारद तथा कविकोकिल वाल्मीकि के अवतार के रूप में मान्यता प्राप्त है। जैसे वाल्मीकि को कवि कोकिल शब्द से व्यवहृत करना, उनकी मधुर संगीत साधना की ओर संकेत करता है। शिष्य की गुणवत्ता से गुरू की साधना एवं गुण गौरव का अनुमान लगाया जा सकता है। वाल्मीकि वस्तुतः वाग्गेयकार है। गीत तथा संगीत दोनों के विशेषज्ञ होने से उनकी अपनी महत्ता है। रामानन्द सम्प्रदाय ने गेय ग्रन्थ के रूप में उनकी महनीय रचना को मान्यता प्राप्त है, अयोध्या में तथा उनके शिष्य द्वारा प्रवर्तित गायन परम्परा सम्प्रदाय में आज तक अनिवार्य रूप से समादृत तथा सुरक्षित है।

अयोध्या के अनेक रामानन्दीय महात्माओं ने अपने जीवन के अन्त तक अनुपम कीर्तनों में श्रीराम का गौरव गान किया है तथा घोरनिराशा से लेकर

परमानन्द तक, इष्टदेवता के कीर्तिमान से लेकर भावना के प्रत्येक स्तर पर रस में डूबे रहे हैं किन्तु उनकी साधना की प्रत्येक चेष्टा श्रीराम की ओर ही प्रवाहित हुई है, उनकी स्वर लहरी उनके इष्ट की प्रसन्नता के लिए ही होती थी। ध्रुपद आदि मूल संगीत पद्धतियों के संगीत विषयक पारस्परिक विनिमय की कृपा से विरक्त महात्माओं को सिद्ध संगीतकार के रूप में स्वीकार किया जाता था फिर भी मानव भावनाओं के सारे सुरों को झंकृत करने वाली उनकी परिमार्जित तथा रामाभिमुख संगीत साधना के सम्बन्ध में लोगों को अधिक ज्ञान नहीं है। यह कहना नहीं होगा कि दीक्षा के साथ ही उनके नये जन्म होने से विरक्त महात्माओं का प्रयोजन श्रीरामप्रीत्यर्थ कैंकर्य करना होता है, प्रीत्यर्थ कैंकर्य के अनेक प्रकारों में गीत द्वारा प्रियाप्रियतम को प्रसन्न करना रसिक उपासना में एक अंग के रूप में प्रसिद्ध है।

भक्ति के विकास में एक ऐसी स्थिति आती है जब भक्त अपने उपास्य के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा जागरित करके अन्य देवों से अविचल रूप से पराङ्.मुख हो जाता है, विरक्त महात्मा भी श्रीराम के अतिरिक्त वे किसी अन्य देवता को अपनी निष्ठा के योग्य नहीं मानते, वे कभी ऐश्वर्यपरक पद, तो कभी विस्मयकारी सौन्दर्य एवं महिमा का अनुभव परिवर्तित हो वाह्य स्वर के रूप में व्यक्त होता है।[9] वहीं श्रीराम ही जो नाद रूप में स्वर सप्तक के रूप में अपना सम्भाग करके संगीत के सम्पूर्ण कलेवर की रचना करते हैं। अतः श्रीरामोपासना नादोपासना से अभिन्न है। श्रीरामजी ने ही नादावतार धारण कर परमसुख की प्राप्ति का निश्चिय द्वार खोल दिया है। संगीत वह राजपथ है, जो रामसायुज्य तक पहुँचाता है। जैसा कि त्यागराज ने

दक्षिण शैली सालग भैरवी राग में गाया है-"संगीतशास्त्रं ज्ञानमु सारुप्य सौख्यद मे मनसा।।"

इस प्रकार इस सामान्य धारणा की रामानन्दी महात्मा सीमित दृष्टिकोणयुक्त नीरस साधक होते हैं के विपरीत यह सिद्ध हो गया है कि वे विरक्त होकर भी परमाराध्य श्रीराम के अकथनीय एवं अनन्त गुणों को प्राणों को झंकृत करने वाले गीतों में गा-गाकर रसमग्न होते हैं, अनुपम मधुरगीतों के द्वारा श्रीरामभक्ति को इतनी मनोहारिणी माधुरी से युक्त तथा सरल बना देते हैं।

रामानन्दी साधक जिनका सम्पूर्ण जीवन श्रीरामानुराग में सम्पादित होता है उनके अनेक पदों में निर्गत श्रद्धा और पवित्र भक्ति का सौन्दर्य निरूपित हुआ है। साधना के क्षेत्र में सगुण श्रीराम के रूप में उनका विशिष्ट आकर्षण होता है, उनकी उदार प्रवृत्ति पर रामानन्दीय प्रभाव स्पष्ट है। भवसागर से पार उतरने के लिए वे प्रभु के विरह में पदों की रचना कर रामनाम का बेड़ा बाँधते हैं वे जीवन भर के लिए प्रभु के विरह में संगीत की गहरी धारा में अपने को छोड़ देते हैं, वे राम रस के परम अनुभवी आस्वादक होते हैं, वे संगीत द्वारा दिव्य रामरसामृत का आस्वादन करके परम उन्मत्त हो उठते हैं, उन साधकों के पदों में उन्हीं श्रीरामजी के लोकमंगल व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा की है। अवधी भाषा में श्रृंगार, सख्य एवं वात्सल्य की रसत्रिपुटी अनुप्राणित रही है। अवध के साधक सन्तों ने अपनी निष्ठा के अनुरूप श्रीराम के मनोमुग्धकारी चित्र अपने पदों में अंकित किये हैं। रामानन्द सम्प्रदाय में

१. अकारों वै सर्वा वाक्, सैषा स्पर्शोष्मभिर्व्यज्यमाना बहूवी नानारूपा भवति। (गीता १०/३३ में गीत तात्पर्यचन्द्रिका पृ. २६६)

ऐसे अनेक महात्मा हुए जिन्होंने अपने गुरू की ओर से मन्दिर में कीर्तन की सेवा प्राप्त की। सेवा विधि में अनेक उत्सवों की व्यवस्था की गई है, प्रभु की अलग-अलग झाँकियों में समय, ऋतु, त्यौहार, जन्मतिथियों के अनुसार प्रतिदिन कीर्तन गायन होता है। साधक पृथक-पृथक तथा सम्मिलितरूप से गाते हुए भाव तरंग में हिचकोले लेते रहते हैं पद्गायन के द्वारा भक्ति की परिपक्व दशा को प्राप्त करते हैं। सन्तों के जीवन का एक और तथ्य जिसका रहस्य समझ में नहीं आता। उनका अपने उपास्य विग्रहों के प्रति दुर्बोध आसक्ति तथा भक्ति होती है, कभी मीरा के समान से गाते गाते अपने आराध्य से वार्तालाप करने लग जाते हैं, नाचने लग जाते हैं.....।[१] इनको सम्पूर्ण जीवन अपने स्वामी के यशः कीर्तन को समर्पित होता है। जो उतुंग भक्तिभावना एवं अनुपम संगीत के सर्वोच्च शिखर को स्पर्श करते हैं वे अलंकार, अर्चना, झूलन, कुसुमतल्प आदि षोडशोपचारों को संगीत का स्वर देते में आनन्द में डूब जाते हैं।

रामानन्दीय संगीत साधक महात्मा किसी न किसी पद्य को रागबद्धकर मन ही मन गुनगाते रहते हैं। स्वर लहरियों में खोये रहते हैं भगवत्स्मृति से जुड़े रहते हैं जैसा कि शुकदेव भागवत के श्लोकों को गुनगुनाते रहते थे-"प्रेम्णा पठन् भागवतं शनैः शनै।[२] उनके कीर्तन रागबद्ध गाते हैं। उनकी संगीत साधना समस्त अध्यात्मिक प्रगति में सहयोगी होती है।

सारांश :-

जिस प्रकार मनु के द्वारा सृष्टि की प्रथम नगरी अयोध्या बसायी गयी तथा जितनी भी कलाएं एवं विद्याएं यहीं से निर्गत हुईं। अतः संगीत भी सर्वप्रथम यहीं से निर्गत हुई, अयोध्या जो परब्रह्म श्रीराम की नगरी तथा उनके साधकों की साधनास्थली होने के कारण संगीत का पवित्रतम रूप अध्यात्मिक संगीत जो संगीत का परम लक्ष्य है उसको प्राप्त करती है। अतः साधु सन्तों की साधना को सबके सामने प्रस्तुत करना आवश्यक है।

संदर्भ :-

१. श्रीभागवत ११/१४/२४
२. भागवतमाहात्म्य अध्याय ६ श्लोक ७८
३. रामानन्द सम्प्रदाय में संगीत की परम्परा पृ.सं. १००(अजय कुमार शर्मा)